

पेश किये हैं, उसके मुताबिक मुरबा नं० 71 की 0.620 है० नहरी पर
में व खरीद के समय से लेकर आज तक मुझ वादी की है और वर्तमान
रिपोर्ट के अनुसार व दस्तावेजी साक्ष्य के अनुसार भी मुरबा नं० 71 की
में कब्जा काशत मुझ वादी की है, इसलिए उक्त खाता के मुरबा नं० 71
है०, 2/0/164 है०, 3/02127 है०, 4/0.076 है०, 5/0.025 है० कुल
का किलावाइज विभाजन का आदेश जारी कर उसी अनुसार डिक्री जारी
दिया जावें। वादी का वाद पत्र वाद के पक्ष में आदेशित कर डिक्री

वादी अधिवक्ता द्वारा लिखित बहस प्रस्तुत कर निवेदन किया कि वादी
प्रतिवादीगण के विरुद्ध श्रीमान न्यायालय धारा 53,188 राजस्थान काशतकारी
किया हुआ है। जिसमें चक 60 एलएनपी के खाता सं० 68/65 का मुरबा
नं० 1/0.228 है०, 2/0/164 है०, 3/02127 है०, 4/0.076 है०, 5/
0.620 है० नहरी भूमि हिस्सा दर्ज है। वादी ने प्रतिवादीगण से जो अनुतोष
वादी ने दावा में ही विभाजन कर दिया है। वादी का प्रतिवादीगण का कुल
दर्ज कर उसमें हिस्सा जो खरीद हुआ है। उसको हिस्सा घोषित करवाना
पूर्ण नहीं मांगा प्रतिवादीगण का हिस्सा कितना है। ब्यानी नहीं किया
संस्थित होने के बाद प्रतिवादीगण को सम्मन जाने के बाद न्यायालय में
वाद पत्र का जवाब प्रस्तुत किया। जवाब में प्रतिवादीगण ने विभाजन में
अच्छी बूरी में से बूरी का वर्णन किया है। जवाब के बाद में वादी
वादी की अच्छी में अच्छी व बूरी में बूरी भूमि का विभाजन प्रस्ताव
व प्रतिवादी का समझौता होने के बाद श्रीमान पीठासीन अधिकारी का
दोनों पक्षों की समझौता से आना कानी कर रहा है व पटवारी हल्का से
नहरी भूमि की कब्जा काशत वादी की रिपोर्ट भी पत्रावली में आई यह के
पटवारी रिपोर्ट में सहमत न होते हुए आपत्ति भी दर्ज करवाई थी। अब इस
कार्यम कर दोनों पक्षों की सहमत बानी चाहिए न्यायालय के सामने सही
प्रतिवादीगण पटवारी की रिपोर्ट से आज भी सहमत नहीं है। लिखित
है कि जवाब में प्रतिवादीगण ने वादी के दावे को स्वीकार नहीं किया है।

